8.4.24

Tender Heart High School, Sec-33-B, CHD.

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-2 'हार की जीत') पृष्ठ-7,8
लेखक- सुदर्शन भाग-1
पुस्तक- नवतरंग-7

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

बच्चो, पाठ-2 'हार की जीत' कक्षा सातवीं की पुस्तक नवतरंग-7 के पृष्ठ-7,8 पर दिया गया है।"

बच्चो! 'हार की जीत' नामक कहानी लेखक सुदर्शन जी द्वारा रचित है। इस कहानी में अन्याय पर न्याय की और असत्य पर सत्य की जीत के अमर सत्य को ही प्रदर्शित किया गया है। बच्चो, क्या आपने कभी सुना है कि किसी चोर या डाकू को बिना किसी हिंसा के हराया जा सकता है? आज हम ऐसी ही घटना के बारे में पढ़ेंगे।

माँ को अपने बेटे को और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद् - भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे 'सुलतान' कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। गाँव के बाहर एक छोटे-से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-2 'हार की जीत') पृष्ठ-7, 8

'मैं सुलतान के बिना नहीं रह सकूँगा', उन्हें ऐसी भ्रांति-सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, "ऐसे चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो।" जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया। बाबा भारती ने पूछा, "खड्गसिंह, क्या हाल है?"

बच्चो, इस पाठ में हमने यह पढ़ा कि बाबा भारती अपने घोड़े से बहुत प्यार करते थे। उन्हें लगता था कि वे सुलतान के बिना नहीं रह पाएँगे। वह उसे अपने बच्चे के समान प्यार करते थे।

बाबा भारती के इलाके में खड्गसिंह नाम का एक डाकू रहता था। डाकू लोगों को दिन दहाड़े लूट लेते हैं। उस डाकू ने सुलतान की कीर्ति के बारे में सुना था। अब वह उस घोड़े को किसी न किसी तरह प्राप्त करना चाहता था। इसी विचार को ध्यान में रखकर वह बाबा भारती के पास सुलतान को देखने आया। बाबा भारती ने जब उसका हाल-चाल पूछा तब उसने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आपकी दया है।"
"कहो, इधर कैसे आ गए?"
"सुलतान की चाह खींच लाई।"

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

8.4.24

Pg 3

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-2 'हार की जीत') पृष्ठ-7,8

"विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।"
"मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।"
"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी!"
"कहते हैं देखने में भी बहुत सुंदर है।"
"क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।"
"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।"

बाबा भारती और खड्गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्गसिंह ने देखा आश्चर्य से। उसने सैकड़ों घोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुज़रा था। सोचने लगा, 'भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीज़ों से क्या लाभ?' कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला, "परंतु बाबा जी, इसकी चाल न देखी तो क्या!"

घोड़े को खोलकर बाहर गए। घोड़ा वायु-वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल को देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए, उस पर वह अपना अधिकार समझता था। जाते-जाते उसने कहा, "बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।"

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गए और वह न आया।

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

8.4.24

Pg 4 B+

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-2 'हार की जीत') पृष्ठ-7, 8

यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए। संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे। सहसा एक ओर से आवाज़ आई, "ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।"

आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, "क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?"

बच्चो! यहाँ तक हमने इस पाठ में पढ़ा कि डाकू खड्गसिंह ने बाबा भारती से उनके घोड़े की तारीफ़ करते कहा, "इस घोड़े की चाह मुझे यहाँ तक खींच लाई है। बाबा ने भी अपना घोड़ा उसे घमंड के साथ दिखाया। बाबाजी घोड़ा दिखाते समय भूल गए थे कि वह एक डाकू है। खड्गसिंह जाते-जाते बाबा से कह गया कि वह यह घोड़ा उनके पास नहीं रहने देगा। यह सुनकर बाबा भारती डर गए और अपने घोड़े की दिन-रात रखवाली करने लगे। बहुत दिन बीत जाने के बाद भी डाकू खड्गसिंह न आया तो बाबा भारती कुछ निश्चिंत हो गए। कुछ दिनों के बाद जब बाबा भारती अपने घोड़े पर सवार होकर घूमने जा रहे थे तब सहसा एक अपाहिज ने उन्हें रोक लिया।

(पृष्ठ-4)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

8.4.24

Pg. 5 DT

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-2 'हार की जीत') पृष्ठ-7,8

बच्चो! आज हम इस पाठ को यहीं तक पढ़ेंगे। पाठ का अगला भाग अगले हफ्ते पढ़ाया जाएगा। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दूँगी।

गृहकार्य:- सब बच्चे इस पाठ को बार-बार पढ़ेंगे। पृष्ठ-11 पर दिए शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

धन्यवाद।

(आखिरी पृष्ठ-5)

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner